धर्म के नाम पर लूटते-खाते बाबा और उनके चेले

अभी ख़बर आई है कि एक एनआरआई महिला की संपत्ति बेचने के मामले में बाबा प्रीतपाल सिंह पकड़ा गया और अब वह पुलिस रिमांड पर है। दरअसल, बाबा प्रीतपाल सिंह तो चोर और ठग बाबाओं का एक उदाहरण मात्र है। हमारे देश में पग-पग पर ऐसे बाबा और 'संत' बैठे हुए हैं जिनकी एकमात्र नज़र भक्तों की जेब पर होती है। ये मौका पाते ही अपने भक्तों की जेबें साफ़ कर रफूचक्कर हो जाते हैं। ऐसे बाबाओं का पकड़ पाना भी आसान नहीं होता, क्योंकि चोला बदल लेने में ये बड़े माहिर होते हैं। किसी भी तीर्थस्थल में आप चले जायें, वहां आपको बाबाओं और संतों की भारी भीड़ मिलेगी। गंगा अथवा अन्य किसी 'पवित्र' नदी के तट पर ये अपने विशेष स्थान पर बैठे रहते हैं और ऐसे भक्तों की तलाश में बगुले की तरह आंखें गड़ाये रहते हैं जो 'आंख के अंधे एवं गांठ के पूरे' हों। जैसे ही कोई मालदार यजमान फंसा, वे उसे कतरा-कतरा लूटने लगते हैं और आश्चर्य की बात तो यह है कि लुटवाने वाले को भी पता नहीं चलता कि वे लूटे जा रहे हैं, क्योंकि धर्म और अंधश्रद्धा ने उनकी सोचने-समझने की शक्ति नष्ट कर दी होती है।

ये बाबा दावा करते हैं कि उनके पास सारी समस्याओं का हल है। वे चुटकी बजाते ही सभी समस्याओं को छू-मंतर कर दे सकते हैं, बशर्ते इसके लिए यथेष्ठ चढ़ावा इन्हें चढ़ाया जाये। अक्सर, इनके जाल में ज़्यादातर महिलाएं ही फंसती हैं। महिलाओं को देखते ही इन भोगी बाबाओं की लार टपकने लगती है। ये उन्हें छोटे-मोटे चमत्कारों (हाथ की सफ़ाई) को दिखा कर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं और प्राय: इसमें सफ़ल भी रहते हैं। रुपये-पैसे, गहने आदि को दोगुना कर देने की बात कह ये असली की जगह नकली गहने थमा देते हैं और चंपत हो जाते हैं फ़िर इन्हें लाख ढूंढो, कहीं नहीं मिलेंगे। अगर मिल भी गये तो काबू में नहीं आयेंगे, क्योंकि गुंडों की तरह इनके गैंग भी होते हैं।

तीर्थस्थलों पर विशेष धार्मिक स्नानों, अर्द्ध कुंभ, कुंभ आदि मेलों में बाबाओं के गैंगों को आसानी से समाजविरोधी कार्यों में लगा देखा जा सकता है। तीर्थाटन पर गये यात्रियों से पैसे ठगने के अलावा ये महिलाओं पर भी कुदृष्टि रखते हैं और मौका मिलते ही उन्हें अपनी वासना का शिकार बना लेते हैं। कई बार तो ये महिलाओं का अपहरण तक कर लेते हैं। यह कहना भी ग़लत नहीं होगा कि कुछ महिलाएं धर्मान्धता एवं मूढ़ता के मिले-जुले प्रकोप के कारण, इनके द्वारा सुनायी गई कहानियों से इस कदर प्रेरित-प्रभावित होती हैं कि स्वयं ही 'आत्मसमर्पण' कर देती हैं। इस तरह के न जाने कितने मामले प्रकाश में आ चुके हैं। अनपढ़ों को तो छोड़िये, पढ़े-लिखे उच्च पदों पर विराजमान लोग़ भी बाबाओं के चक्कर में फंस जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व यह खबर आई थी कि रांची में एक इंजीनियर का परिवार किसी बाबा के चक्कर में पड़ा हुआ था। पूरा परिवार उस बाबा को भगवान की तरह पूजता था। इधर बाबा इंजीनियर की पत्नी और उसकी बेटियों के यौन शोषण में लगा हुआ था। जब इंजीनियर ने यह देखा तो उसके पांवों तले ज़मीन खिसक गई। उन्होंने तत्काल उस बाबा को भगाया। एक बाबा ने एक विधवा जमींदार महिला को अपने जाल में फंसाया और उसका माल हड़पने के साथ-साथ उसकी इकलौती जवान कुंआरी बेटी का भी यौन शोषण करने लगा। यहां तक कि जब उसकी शादी हो गई तो भी उसे वह गंदे-गंदे पत्र लिखा करता था। इससे उसका वैवाहिक जीवन तबाह हो गया।

इस मरह बाबाओं के मायाजाल की कहानियां कम नहीं हैं। बहुत से बाबा और पीर तो ऐसे हैं जो नियमित रूप से अख़बारों में अपने विज्ञापन प्रकाशित करवाते हैं। ये तंत्र अंगूठियां बेचते हैं और काले इल्म का प्रभाव दिखाने का दावा करते हैं। कहते हैं कि बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान वे चुटकियों में करते हैं। इनके चक्कर में जो फंसा, उसकी ख़ैर नहीं। लेकिन धर्मान्ध लोग़ इन बाबाओं के चक्कर में पड़ते हैं और अपना गला कटवाते हैं।

बड़े-बड़े मठों के साधु-संतों की जीवन शैली देखें तो पता चले कि दूसरों को सादगी का उपदेश देने वाले ये संत भोग-विलास में किस कदर डूबे रहते हैं। ये लंबी गाड़ियों पर अंगरक्षकों के साथ चलते हैं और महंगे-महंगे मोबाइल फ़ोनों के अलावा लैप टॉप तक का इस्तेमाल करते हैं। मेले-ठेलों में पूर्णत: निर्वस्त्र होकर भले ही अपनी काम कुंठा का सार्वजनिक प्रदर्शन करते हैं, वहीं इनके खज़ाने में हीरे-मातियों और बहुमूल्य रत्नों की भरमार होती है। अक्सर ये बाबा और संत विदेशी चेलों को मूंडने में भी सफ़ल हो जाते हैं और फ़िर जम कर उन्हें ठगते हैं। भौतिकता की मार से व्याकुल पश्चिमी लोग़ों को इन पाखंडियों के व्यवहार में आध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं और ये जम कर उन पर धन-वर्षा करने लगते हैं। एक तरह के बाबा और संत ऐसे होते हैं जिन्हें राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता है ये नेताओं की जन्मकुंडलियां बांचते हैं कि वे चुनाव में जीतेंगे कि नहीं। वामपंथियों को छोड़ कर शायद ही कोई नेता हो जिसकरा अपना कोई 'बाबा' न हो। चुनावों में बाबाओं-तांत्रिकों-साधुओं का बिज़नेस अपने चरम पर पहुंच जाता है। सभी नेता अपने-अपने बाबाओं से आशीर्वाद लेने दौड़ते हैं। ये बाबा कभी नवग्रह शांति का उपाय सुझाते हैं तो कभी शनिदेव के प्रकोप की शांति का। कभी किसी ग्रह की दृष्टि वक्र बताते हैं तो कभी किसी ग्रह की। कभी शत्रुओं के नाश के लिए विशेष यज्ञ करवाने की बात करते हैं। और चूंकि ये अनुष्ठान नेताओं के लिए होने होते हैं, इसलिए बाबाओं-संतों का यज्ञ खर्च भी लाखों में होता है।

हमारे देश में कुछ राजनीतिक हस्तियां भी ऐसी रही हैं जिनके स्थाई आध्यात्मिक गुरु हुआ करते थे। उदाहरण के लिए पूर्व प्रधानमंत्री स्व. नरसिंहाराव के गुरु चंद्रास्वामी। नरसिंह राव के शासन के दौरान इनकी सहमति के बिना पीएमओ में पत्ता तक नहीं हिलता था। दक्षिण दिल्ली में बना इनका आश्रम किसी राजमहल से कम नहीं था। जब नरसिंहाराव की सत्ता डांवाडोल होने लगी तो उसे बचाने के लिए इन्होंने कई यज्ञ किये थे। ये तांत्रिक साधक थे और अंग्रेजी न जानने के बावजूद कैलाशनाथ अग्रवाल उर्फ़ मामा जी के सहयोग से विश्व के ग्लैमर वर्ल्ड की चर्चित हस्तियों से अपने संबंध रखते थे। यही नहीं, इनके संबंध हथियारों के बहुचर्चित सौदागर अदनान खशोगी से भी थे। ऐसा कहा जाता है कि हथियारों की दलाली से ये भी जुड़े हुए थे। कई विवादास्पद मामलों में इन्हें सीबीआई जांच का सामना करना पड़ा। साथ ही, चंद दिनों के लिए काल कोठरी में भी समय बिताना पड़ा। इनका तांत्रिक प्रभाव और चमत्कारी शक्तियां इन्हें काल कोठरी में जाने से नहीं बचा सकीं। कैलाशनाथ अग्रवाल उर्फ़ मामा जी के निधन के बाद चंद्रास्वामी का प्रभामंडल भी धीरे-धीरे समाप्त होने लगा। वैसे पहली बार इंदिरा गांधी ने ही राजनीति में तांत्रिकों, योगियों और और पंडों को लाने का काम किया था। इनके विश्वस्त 'रासपुटिन' थे धीरेन्द्र ब्रह्मचारी। कहा जाता है कि इंदिरा गांधी इनसे 'महत्त्वपूर्ण' विषयों पर चर्चा करती थीं और बंद कमरे में इनसे यौगिक क्रियायें सीखती थीं।

इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी ने पंडे-पुरोहितों को विशेष तव्वजो नहीं दी। पर नेता और पंडे-पुरोहितों के बीच बड़ा गहरा संबंध है। यह संबंध स्वार्थ पर टिका हुआ है। आज तर्कपरकता का जैसे-जैसे लोप होता जा रहा है, आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा प्राप्त किये हुए और उच्च पदों पर बैठे लोग़ राह चलते मंदिरों-गुरुद्वारों पर मत्था टेकते चलते हैं और कोई भी महत्त्पूर्ण काम पंडों की सलाह के बिना नहीं करते हैं। 'महाजनो येन गत: स पंथा।' फ़िर आम जनता पंडे-पुरोहितों के भगवा जाल में क्यों न फंसे और क्यों न लुटे?

हत्या के मामले में सिरसा ज़िले के एक बाबा को ले कर न्यायिक प्रक्रिया के नाम पर सीबीआई और हाई कोर्ट के बीच जो नाटकबाजी हो रही है, उसका एक नमूना मज़दूर मोर्चा के गतांक में प्रस्तुत किया गया था। इसी से मिलता-जुलता एक और ड्रामा आजकल गुजरात के एक 'बापू' का चल रहा है जो सुप्रीम कोर्ट की पेशियां भुगतने हेतु फरीदाबाद में डेरा डाले बैठा है। इसके अलावा और न जाने कितने बाबे-बाबियां आये दिन इस शहर में पधारे रहते हैं। इनमें से कोई भी अपने भक्तों के बीच परमात्मा से कम नहीं होता। कहने को तो ये अपने भक्तों को सन्मार्ग पर चलने की कहते हैं, परंतु उपभोग और एय्याशी करते हैं 'भक्तों' के काले चढ़ावे पर।

□□ मनोज कुमार झा

चकमक लाल ने फ़िर अख़बार निकाला

विधानसभा चुनाव के दौरान अपने अख़बार के माध्यम से चकमक लाल ने अच्छी-खासी कमाई की थी। यह बात और है कि उनका पूरा लेखन कार्य उनके 'गुरु जी' ने ही किया था और उसके लिया वोदका के सिवा एक अधेला तक नहीं लिया था। चकमक लाल ने भी उन्हें मुद्रा के रूप में कुछ देना उचित नहीं समझा था। सिर्फ़ वोदका से उनका काम काफ़ी सस्ते में हो गया था। वैसे, उनके बीच पैसे के लेन-देन का भी करार था। पर चकमक लाल इस करार को पूरा करने की जगह वोदका का अद्धा अथवा पव्वा ला कर गुरु जी की तात्कालिक समस्या का हल कर देते थे। पर चुनाव परिणाम आने के बाद चकमक लाल ने अपने गुरु जी के पास आना बंद कर दिया। गुरु जी के सामने वोदका संकट पैदा हो गया। जब तक पैसे उन्हें इधर-उधर से मिलते रहे, तब तक उन्हें भी अपने चेले चकमक लाल का ख्याल नहीं आया, पर जब अन्य स्रोतों से पैसे आने बंद हो गये तो गुरु जी को चकमक लाल का ध्यान आया। उन्होंने उनसे मोबाइल के माध्यम से संपर्क करना चाहा। पर लाख प्रयास के बावजूद संपर्क हो नहीं पाया। बराबर चकमक लाल का फ़ोन बंद रहने का संदेश मिलता। अब गुरु जी को चकमक लाल पर काफ़ी क्रोध आने लगा, क्योंकि आखिर अन्य ऐसे स्रोतों से उनका काम कब तक चलता जो भरोसेमंद नहीं थे। इधर गुरु जी के वोदका प्रेम के कारण उनके घर वाले, विशेषकर उनकी पत्नी काफ़ी दुखी थीं। और इधर वोदका नहीं मिलने से सरदर्द होने के कारण वे अपने ऑफिस में भी मन लगा कर काम नहीं कर पा रहे थे। ऑफिस से उन्हें एक-दो बार चेतावनी भी मिल चुकी थी। गुरु जी का यह सिद्धांत था कि वेतन के पैसे से कभी वोदका पान नहीं करेंगे और अतिरिक्त आमदनी का अब कोई सहारा रहा नहीं। शहर के एक और प्रकाशक एवं अख़बारनवीस सेठ जी से उनके संबंध काफी पहले ही टूट चुके थे, क्योंकि वे सेठ जी को बहुत जली-कटी सुनाते थे और उनके फ्रिज में रखी 'रायल चैलेंज' का असीमित उपभोग करते थे। सेठ जी चाहते थे कि रायल चैलेंज का इस्तेमाल तो वे करें पर उन्हें जली-कटी सुनाना बंद कर दें। आखिर उनके साहित्यिक ज्ञान की एक सीमा थी, नहीं तो मैगजीन प्रकाशन के लिए वे उनकी सेवा क्यों लेते। और वे थे कि अक्सर सेठ जी के साहित्यिक ज्ञान की परीक्षा लेने लगते थे। वैसे, काम उनका ढंग से कर देते थे। पर पता नहीं क्या हुआ, शायद रायल चैलेंज का स्टॉक समाप्त हो गया था और सेठ जी ने पैसा नहीं होने का बहाना कर तत्काल व्हिस्की मंगाने में लाचारी जाहिर कर दी थी।

इसके बाद ही चकमक लाल के लिए लिखना इन्होंने स्वीकार किया था।

जब चकमक लाल से काफ़ी दिनों तक उनका संपर्क नहीं हो पाया तो उन्हें समझ में आ गया कि अब उससे पैसे मिलने से रहे। अंत में आजिज आ कर उन्होंने शराब से तौबा कर ली और भांग का इस्तेमाल करने लगे। यह सस्ता नशा था और उनके अनुसार इससे रचनात्मक प्रेरणा भी काफ़ी मिलती थी। भांग का भारी मात्रा में स्टॉक उन्होंने मथुरा जा कर कर लिया था।

इसी बीच, काफ़ी दिनों के बाद एक दिन अचानक चकमक लाल तब हाज़िर हुए जब वे ऑफिस जाने की तैयारी में लगे हुए थे। चकमक लाल ने उनके पांव छुए और गुरु जी के इशारा करने पर उनके कमरे में मौजूद प्लास्टिक की एकमात्र कुर्सी पर बैठ गये। सामने तख्त पर गुरु जी ने स्थान ग्रहण किया। उन्होंने चकमक लाल से कोई शिकवा-शिकायत नहीं की कि वे इतने दिनों के बाद क्यों मिलने आ रहे हैं। उनके पैसे का क्या हुआ आदि। चकमक लाल ने भी इस संबंध में कोई चर्चा नहीं की।

उन्होंने सिर्फ़ यह कहा कि विधानसभा चुनाव के बाद अख़बार बंद कर दिया था, क्योंकि ढंग का कोई फाइनेंसर मिला नहीं। अब नगर निगम चुनाव नजदीक है, इसलिए चाहता हूं कि फ़िर से अख़बार निकालूं और इसके अलावा मैगजीन निकालने की भी योजना है। यह कहते हुए चकमक लाल ने अपनी जेब से वोदका का एक पव्वा निकाल कर गुरु जी की तरफ बढ़ाया। पव्वा देखते ही गुरु जी ने कहा कि इसके नशे से मैं मुक्त हो चुका हूं और भांग का सेवन शुरू कर दिया है। इससे समाज में बेइज्जती नहीं होती, परिवार में भी शांति बनी रहती है और रचनात्मक प्रेरणा भी ज़्यादा मिलती है। इस पर चकमक लाल ने कहा कि यह गुरु जी आपने अच्छा किया। गुरु जी ने कहा-अच्छा-बुरा जो भी किया, उसकी परवाह नहीं। हां, आप बतायें कि किस सेवा के लिए पधारे हैं? चकमक लाल ने कहा कि गुरु जी, मैंने सोचा है कि नगर निगम के चुनाव में कमाई का एक जरिया मिला है, सो अख़बार फ़िर से निकालूं। पर इसके लिए लिखने का काम आप ही कर सकते हैं। गुरु जी ने जवाब दिया कि वे तो राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय राजनीति पर ही लिखते हैं। बहुत हुआ तो राज्य की राजनीति पर भी कलम चला देते हैं। अब सड़कछाप नगर निगम चुनाव पर वे क्या लिखेंगे? इस पर चकमक लाल ने फ़िर गुरु जी के पांव छू लिये और कहा कि वे जानते हैं कि एक पत्रकार के रूप में उनका दर्जा काफ़ी ऊंचा है, पर उनकी कृपा से ही वे कुछ कर सकते हैं। रहा नगर निगम चुनाव में कुछ लिखने का तो किसी को हीरो बनाना है, किसी को ज़ीरो। जो पैसे देगा, उसे हीरो बना देंगे। मैं आपको बता दूंगा कि किसे हीरो बनाना है और किसे ज़ीरो। अब काफ़ी संकोच के साथ गुरु जी ने मुंह खोला कि मुझे क्या मिलेगा? इस पर चकमक लाल जी ने कहा कि आप तो जानते ही हैं कि यहां के नेता कैसे हैं।

एक बार मैटर छाप देने के बाद दर्जनों बार दौड़ाते हैं, पर मैं आपको माहवारी दो हज़ार रुपये नकद दूंगा। वैसे आपने दारू छोड़ दी है, पर इसे गिफ़्ट के तौर पर स्वीकार करें। पर गुरु जी ने इसे अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि ठीक है, नेताओं के नाम जो हीरो-ज़ीरो वाले हों, पहले से मुझे बता देना। मैं लिख दूंगा। पर पहले की भांति मत करना। पैसे दे देना। चुनाव में कमाई कर तुम तो कार पर चलोगे, मैं तो पैदल-पांव ही चलता रहूंगा। यह सुन कर थोड़ा शर्मिन्दा होने का भाव चेहरे पर लाते हुए चकमक लाल जी ने पांच सौ रुपये का एक नोट निकाल कर गुरु जी को बढ़ा दिया और दर्जनों समाजसेवियों की लिस्ट लिखा दी। यह भी बता दिया कि कब किसे हीरो बनाना है, किसे ज़ीरो। गुरु जी ने पांच सौ का नोट जेब के हवाले किया और यह पक्का वादा किया कि वे जो कहेंगे, लिख मारूंगा। चुनाव के दौरान और उसका रिजल्ट आने तक चकमक लाल के लिए उन्होंने खूब लिखा, पर पैसे का तगादा करते तो चकमक लाल आज-कल करते। इसी आज कल में नगर निगम के चुनाव की सारी हलचल समाप्त हो गई। कुछ दिन तक तो उन्हें उम्मीद रही कि पैसे मिल जायेंगे, पर जब महीनों बीत गये और वे चकमक लाल को फ़ोन लगा-लगा कर हार गये तो उन्होंने संकल्प किया कि इस बंदे के लिए कभी कुछ नहीं लिखूंगा।

इसके बाद चकमक लाल एक दिन हाज़िर हुए। गुरु जी के पांव छुये और कहा कि वे पत्रिका निकालने जा रहे हैं, पर सिर्फ़ उनके भरोसे। वे उन्हें अपना विशेष सलाहकार नियुक्त करना चाहते हैं। उन्होंने चकमक लाल से जब पहले के पैसे का तगादा किया तो वे निर्लज्ज भाव से बोले - सब इस मैगजीन में बराबर कर दूंगा। कृपया मेरे लिए एक संपादकीय लिखें और इसमें राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय विषयों पर लेख छपेंगे। ग्लैमर और सेक्स पर रंगीन पेज छापूंगा। फ़िल्मी दुनिया पर भी रंगीन पेज होंगे। लोकल राजनीति पर दो-चार आइटम आप लिख देंगे। पैसे के लिए आप बेफ़िक्र रहें। फलां सेठ ने एक हफ़्ते बाद विज्ञापन के बदले दस हज़ार देने को कहा है, मैं दो हज़ार आपको दूंगा और महीने में तीन हज़ार मैगजीन के दूंगा। तब तक के लिए ये पांच सौ रखें और कहें तो मथुरा से भांग मंगा देता हूं। गुरु जी का भांग का स्टॉक खत्म ही होने वाला था। उन्होंने कहा कि भांग जल्द मंगाओ। बाकी मैं लिखने के लिए तैयार हूं। इसे साथ ही सेक्स और ग्लैमर पर लिखे वे लेख उन्होंने चकमक लाल को सौंप दिये जो उन्होंने शुरुआती दौर में लिखे थे और जो राष्ट्रीय मैगजीनों से सखेद वापस आ गये थे।

□ ग़रीब दास